कला एवं शिल्प महाविद्यालय
पटना विश्वविद्यालय, पटना

ई–कंटेंट – बी.एफ.ए. 4 सेमेस्टर
डॉ0 राखी कुमारी
सहायक प्राध्यापिका (छापाकला)

बिनोद बिहारी मुखर्जी

बिनोद बिहारी मुखर्जी बुजुर्ग पीढ़ो के उन सचेत कलाकारों में से हैं, जो वर्तमान में नई पीढ़ी के साथ कदम मिलाकर अविरल गति से आगे बढ़े थे।

बिनोद बिहारी का जन्म सन् 1904 ई0 में कलकत्ता के 'बेहाल' नगर में हुआ था। वें बाल्यकाल की औपचारिक कला शिक्षा से वंचित रहें एवं नेत्र रोग से भी पीड़ित रहे, किन्तु वे अपने आत्मविश्वास से ही उन्होंने विधाध्ययन और कला उपासना पूर्ण की।

इनकों अवनीन्द्रनाथ, गगेन्द्रनाथ एवं नन्दलाल बोस आदि के चित्रों ने, जापानी चित्रकार सोसात्सू, साथ ही फारसी कला ने प्रभावित किया साथ ही मिस्र एवं नीग्रों कलाकृतियाँ, कालीघाट की पट शैली और ग्राम्य खेल–खिलौनों ने भी इन्हें अत्याधिक प्रभावित किया। इनकों लेखन कार्य में भी रूची थी।

सन् 1957 ई0 में नेत्रों की शैल्य चिकित्सा के दौरान इनकी नेत्रों की ज्योति खत्म हो गई। कला फिल्म निर्माता स्वर्गीय 'सत्यजीत राय' उन पर वृत चित्र बनायें जिसे 'इनर आई' शीर्षक दिये। इन्होंनें

भित्ति चित्रण में ख्याति अर्जित की। अपनी इच्छानुसार ऐतिहासिक, प्रेमपूर्ण ग्रामीण जीवन के विभिन्न विषय और प्राकृति चित्र चित्रित किये।

बिनोद बिहारी मुखर्जी नन्दलाल बसु के पटु शिष्यों में से एक थे। इन्होंनें छापाकला माध्यम में अनेक चित्रों की रचना की। सन् 1904–80 के बीच अम्लाकन और काष्ठ उकेरण में कार्य किये और अपने सशक्त संयोजनों में नवीनता दी। उनके कार्यरत लकड़ी का लयात्मक काष्ठ उकेरण आज भी प्रभावित करता है। इनके काम में रूप व अमूर्त गुणों को श्रद्धा से उभारा गया है। इन्होंने सन् 1936 से 1945 के बीच अनेक सैरे लिनोलियम और काष्ठ में उकेरे। माध्यम की सुनियोजित बनावट सशक्त गति और तनाव इन छापों में जानदार प्रभाव पैदा कर देते है। बाद के दिनों में शिलालेखन के छापे भी बनाये।

बिनोद बिहारी ने सन् 1949–50 ई0 में नेपाल संग्रहालय के अध्यक्ष पद पर कार्य किये। अपने इस कार्यकाल के दौरान नेपाल में उपलब्ध भारतीय कलाकृतियों एवं कलाग्रन्थों क सम्बन्ध में महत्वपूर्ण कार्य किये। इनकी मृत्यु सन् 1980 ई0 में हो गया।

संदर्भ

1. भारतीय चित्रकला एवं मूर्त्तिकला का इतिहास 'डॉ0 रीता प्रताप' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर

2. भारतीय छापाचित्र कला आदि से आधुनिक काल तक 'डॉ0 सुनील कुमार' भारतीय कला प्रकाशन, दिल्ली